भारतीय-वाङ्मयेषु

गोः संरक्षणं-सम्वर्धनम्

(Rearing and Conserving Cow in Indian Literature)

सम्पादकौ

डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री

डॉ. उमेश प्रसाद दाश

प्रकाशक

संस्कार-भारती मानवकल्याण संस्थान जयपुर राजस्थान

बी-23, भूरापटेल नगर, पोस्ट-हीरापुरा, जयपुर (राज.) 302021

मोबाइल नं. 09414228995, 09785470992, 09414279715

Email: sbmksj2001@gmail.com

Scanned with CamScanner

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

ISBN : 978-81-931559-0-5

प्रकाशन वर्ष : 2016

मूल्य : 400/-

प्रकाशक : संस्कार भारती मानवकल्याण संस्थान, जयपुर
बी-23, भूरा पटेल नगर, पोस्ट-हीरापुरा,
अजमेर रोड़, जयपुर-21 मो. +91-94142 28995
Email: sbmksj2001@gmail.com

सम्पादकौ : डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री
डॉ. उमेश प्रसाद दाश

मुद्रक : टी.वी.के. कम्प्यूटर्स
टोंक फाटक, जयपुर
मो. +91-9828858338

Scanned with CamScanner

वेदों में गौ–तत्व

–प्रो. अर्चना दुबे

भारतीय संस्कृति में प्रारम्भ से ही गौ का विशेष महत्व रहा है। सांस्कृतिक और धार्मिक दोनों की दृष्टियों से भारतीय समाज में गौ परिवार के एक विशिष्ट सदस्य के रूप में प्रतिष्ठित रही है। गो का यह महत्व उसकी अतुलनीय उपयोगिता के कारण ही है। भारतीय संस्कृति के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक पुरुषार्थों के साधन का मूल भी गो ही है। गौ के दुग्धीय पदार्थों की यज्ञ में देवों के लिए हवि प्रदान की जाती है, जिस कारण गौ में सभी देवों कानिवास माना जाता है। इसी कारण वेदों ने गौ की बहुत महिमा भी गाई है और इसे अघ्न्या अथवा अवध्या कहा है। वैदिक वाङ्मय में सवा सौ से अधिक बार अघ्न्या पद का प्रयोग हुआ है। आयुर्वेद के अनुसार भी पंचगव्य दूध (दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर) को पवित्र रसायन माना गया है। अतः वेदों में गोमहिमा परक अनेक मंत्र उपलब्ध है, जिनमें से कुछ एक को निम्न प्रकार से उद्धृत किया जा रहा है।

ऋग्वेद में गौ का महत्व इस प्रकार से वर्णित किया है–''हमें इस प्रकार की बुद्धि दीजिए, जिस प्रकार कि गाय को प्रमुख स्थान देकर, स्वयं अनुचर बन कर चलने से हम अजेय हो (1.90.5)। जिस स्थल पर गाय सुख–पूर्वक निवास करती है, वहां की रज तक पवित्र हो जाती है। वह स्थान तीर्थ बन जाता है (1.154.6)। यदि किसी को इस संसार में सभी प्रकार का वैभव प्राप्त करना है तो उसे गौ माता की सेवा करनी चाहिए। उसे गौ का दान, गौ की पूजा और स्तुति भी करनी चाहिए। (1.53.5)। हमारे पशु, सन्तान और गौ के लिए सब प्रकार की शान्ति प्राप्त हो। (8.5. 20)।

हे सोम देव! हमारे अन्तः करण में तु, जिस प्रकार गौएँ जो के खेत में आनन्दपूर्वक संचरण करती है ओर मानव अपने निजी घरों में सुखी होते हैं, वैसे ही रमण कर (1.91.13)। पर्वत भी गोचरभूमि हैं। पर्वत गौओं का

Scanned with CamScanner

संरक्षण करने वाले हैं। अनेक गौएं साथ लेकर उन्हें पर्वतों पर चराने के लिए जाना उचित है (1.7.3)। हे अश्विनीकुमारो! हम आपके उस गोलोक रूपी निवास-स्थल में जाना चाहते हैं, यहां बड़ी-बड़ी सींगवाली और सर्वत्र जाने वाली गौएं निवास करती हैं। वहीं पर विष्णु देव का परमपद प्रकाशित हो रहा है (1.154.6)।

गौ एकादश रुद्रो की माता, अष्ट वसुओं की कन्या और द्वादश आदित्यों की भगिनी है, जो अमृतरूप दुग्ध को प्रदान करने वाली है (8.101.15)।"

यजुर्वेद में गौ की महिमा इस प्रकार से गाई गई-"जिस ब्रह्म विद्या द्वारा मनुष्य परम सुख को प्राप्त करता है, उसकी उपमा सूर्य से दी जा सकती है, उसी प्रकार द्यु लोक की समुद्र से तथा विस्तीर्ण पृथ्विावी की इन्द्र से उमपा दी जा सकती है। परन्तु प्राणीमात्र के अनन्त उपकारों को अकेली सम्पन्न कराने वाली, गौ की किसी से उपमा नहीं दी जा सकती (23.48)"।

अथर्ववेद में गौ. की महिमा इस प्रकार से गाई गई है-"हे अवध्य गौ! तेरे स्वरूप के लिए प्रणाम है। अघ्न्ये! ते रूपाय नमः। (अथर्व 10.10.1) हे राजन्! देवताओं द्वारा प्रदत्त ब्राह्मण की वाणी की प्रतीक यह गौ खाने के लिए कदापि नहीं है। इसका अन्त करने की इच्छा कभी नहीं करना(5.18.1)। गौ हत्यारों को सीसे की गोली से मार देना चाहिए, ऐसा आदेश है। (1.16.4)।।

राजेन्द्र भुवन रोड
जिला गीर सोमनाथ,
गुजरात 322265
मोबाईल नं. 09558879821

Scanned with CamScanner